DR. INDRASEN SINGH

UG. History (Hons.) SEM - VI

Paper - CC - 13

DOMS Page No.

Date 13 / 05 / 2020

The Early Phase of the Growth of Press in India

Trace the early phase of the growth of Press in the Modern India.

आधुनिक भारत में प्रेस के विकास के प्रारम्भिक चरण को रेखांकित करें।

या (अथवा)

Trace the attitude of the East India Company towards the early news papers which were published from Bengal.

बंगाल से निकलने वाले प्रारम्भिक समाचार-पत्रों के प्रति ईस्ट इण्डिया कम्पनी के दृष्टिकोण का उल्लेख करें।

मुद्रण कला (Printing Art) के आविष्कार से पहले प्राचीन तथा मध्ययुगीन भारतीय राजदरबारों में संदेशवाहक (Messenger) या हरकारे एक स्थान से दूसरे स्थान तक अथवा एक दरबार से दूसरे दरबार तक हस्तलिखित-पत्रों के जरिये समाचारों को पहुँचाया करते थे। सार्वजनिक जगहों पर सूचनाएँ विज्ञप्ति, स्तूपों के निर्माण और हस्तलिखित-पत्रों के द्वारा पहुँचायी जाती थीं। स्पष्ट है मुद्रण कला या छापाखाना के आविष्कार के पूर्व हस्तलिखित समाचार-पत्रों का प्रचलन था, किन्तु छापाखाना के आविष्कार व विकास ने सूचना के क्षेत्र में क्रान्ति ला दिया।

मुद्रण कला का आविष्कार सर्वप्रथम चौदहवीं शताब्दी में चीन में हुआ। 1340 ई० में पहला समाचार-पत्र पेकिंग में प्रकाशित हुआ। यह एक दैनिक-पत्र था। आधुनिक पत्रकारिता के इतिहास में दूसरा स्थान इटली का है। इटली के समाचार-पत्रों को 'गजेट' (Gazette) अर्थात् छोटा सिक्का कहा जाने लगा। कालान्तर में इन्हीं समाचार-पत्रों के आधार पर समाचार-पत्रों को 'गजेट' के नाम से संबोधित किया जाने लगा। पत्रकारिता के क्षेत्र में जर्मनी का तृतीय स्थान आता है। ब्रिटेन का पहला पत्र 'पोस्टमैन' 1622 ई० में प्रकाशित हुआ। धीरे-धीरे मुद्रण कला के विकास ने विश्व के विभिन्न देशों में अपना प्रभाव स्थापित किया। भारत भी इससे बच न सका।

भारत में मुद्रणालय का आरम्भ (The Beginning of Press in India) :- वास्कोडिगामा द्वारा भारत के समुद्री मार्ग की खोज के साथ ही पुर्तगालियों का आगमन हमारे देश (भारत) में हुआ। इसके साथ ही भारत में यूरोपियनों के व्यापार व शासन करने की लालसा का एक दौर प्रारम्भ हुआ। 1550 ई० में यूरोप से दो प्रेस मंगवाए गये। इनमें से एक गोआ में स्थापित किया गया। इसका उद्देश्य ईसाई धर्म पुस्तिकाओं का प्रकाशन करना था। 1557 ई० में गोआ के पादरियों ने पहली पुस्तक (First Book) भारत में प्रकाशित की। दूसरा प्रेस 1578 ई०

(शेष नोट कल उपलब्ध कराया जाएगा)

में तमिलनाडु के तिनवेली जिले के पौरीकील नामक स्थान पर लगाया गया। 1684 ई० में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने बम्बई अब मुम्बई में मुद्रणालय (Printing Press) लगाया। इन सभी प्रारम्भिक छापेखानों का उद्देश्य मात्र धार्मिक साहित्य व पाठ्य पुस्तकों का प्रकाशन था। समाचार-पत्रों आदि का प्रकाशन का विचार अभी कोसों दूर था।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारत में सबसे पहले प्रिंटिंग प्रेस लाने वाले पुर्तगाली ही थे। कालान्तर में भारत में कम्पनी शासन काल व ब्रिटिश क्राउन शासन काल में भारतीय प्रेस का विकास शासन के विरोध-प्रतिरोध के साथ-साथ धीरे-धीरे हुआ और इसने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण कार्य किया।

भारत में प्रेस का विकास (Growth of Press in India):- ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने 1684 ई० में प्रिंटिंग प्रेस अवश्य खोला, परन्तु लगभग 100 वर्षों तक कम्पनी के प्रदेशों में कोई समाचार-पत्र नहीं छपा। इसका सबसे बड़ा कारण कम्पनी के कार्यकर्ताओं का निजी व्यापार में अभिलिप्त होना था। कम्पनी के असन्तुष्ट कर्मचारियों, जिनका उद्देश्य कम्पनी के अधिकारियों के निजी व्यापार एवं बुरे धन्धों को उजागर करना था। विलियम बोल्ट (William Bolts) ने भारत में प्रथम समाचार-पत्र प्रकाशित करने का प्रयास किया तो वह असफल हुआ। इसका कारण कम्पनी के अधिकारियों का विरोध था। द्वारा समाचार-पत्र प्रकाशित करने का प्रथम प्रयास किया गया

1772 ई० में तंजोर जिले के तिनकोवर नामक स्थान पर डेनमार्क के पादरियों ने प्रेस आरम्भ किया। 1772 ई० में ही अंग्रेजों ने भी मद्रास (चेन्नई) में छापाखाना खोला, 1779 ई० में कलकत्ता में प्रेस की स्थापना की गई जो चार्ल्स विकिलन्स के प्रबन्ध के अधीन थी। उसने हुगली में स्थानीय व्यक्ति नथनील हथलैण्ड की सहायता से बंगला भाषा का पहला व्याकरण तैयार करवाया।

वारेन हेस्टिंग्ज तथा हिक्की (Warren Hastings and Hicky):- 'बंगाल गजट' (Bengal Gazette) या 'The Calcutta General Advertiser' (कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर) साप्ताहिक पत्र के रूप में 1780 ई० में James Augustus Hicky (जेम्स आगस्टस हिक्की) ने चालू किया। प्रारम्भ से ही पत्रिका प्रबन्धकों के साथ वारेन हेस्टिंग्ज की विरोधी भावना आरम्भ हुई, जो उस समय बंगाल का गवर्नर जनरल था। पत्रिका ने श्रीमती वारेन हेस्टिंग्ज तथा वारेन हेस्टिंग्ज की सामान्य नीति, सर्वोच्च न्यायालय तथा न्यायधीशों की आलोचना की। वारेन हेस्टिंग्ज ने मि० हिक्की के विरुद्ध कड़ी कारवाई की। मि० हिक्की को कैद किया गया तथा 1782 ई० में पत्रिका को बन्द कर देना पड़ा।

(शेष नोट कल उपलब्ध कराया जाएगा)

मि० हिक्की एक अत्यन्त साहसी व्यक्ति था। वह समाचार-पत्रों की स्वतन्त्रता का महान समर्थक था। वह भारत में पत्रकारिता के इतिहास का अग्रदूत (Forerunner) था। निम्नलिखित शब्दों में मानव हिक्की का कुछ भाव मिलता है, "मि० हिक्की समाचार-पत्रों की स्वतन्त्रता को अंग्रेज की सत्ता तथा एक स्वतन्त्र सरकार के लिए आवश्यक समझता है। प्रजाजनों को स्वतन्त्रता होनी चाहिए कि वे अपने सिद्धान्त तथा समितियाँ घोषित कर सकें तथा प्रत्येक वह कार्य, जो इस सिद्धान्त पर किसी प्रकार दबाव डालता है, समुदाय के लिए घातक तथा अत्याचारपूर्ण है।"

बाद में Calcutta Gazette (कलकत्ता गजेट) 1784 ई० में, Bengal Journal (बंगाल जनरल) 1785 ई० में, The Oriental Magazine of Calcutta (कलकत्ता का प्राच्य पत्रिका) 1785 ई० में, The Calcutta Amusement (कलकत्ता एम्यूजमेंट) 1785 ई० में, Calcutta Chronicle (कलकत्ता क्रोनिकल) 1786 ई० में और Madras Courier (मद्रास कूरियर) 1788 ई० में प्रकाशित किये गए। इन सभी समाचार-पत्रों ने हिक्की की घटना से सबक लिया और कम्पनी और कम्पनी के अधिकारियों की कोई आलोचना नहीं किया।

<u>कानवालिस तथा डुएन</u> (Cornwallis and Duane):- लार्ड कार्नवालिस ने भी वारेन हेस्टिंग्ज की ही भान्ति प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश रखने की नीति का पालन किया। मि० डुएन ने जो "Indian World" (इण्डियन वर्ल्ड) के सम्पादक थे, ऐसी सामग्री लिखी जिसे कार्नवालिस सहन न कर सका। परिणामस्वरूप डुएन को बन्दी बना लिया गया तथा उसका अपमान किया गया। मि० डुएन तथा गवर्नर-जनरल के मध्य अनेक वर्षों तक खींचतान होती रही तथा अन्त में डुएन को देश निकाला देकर यूरोप भेज दिया गया।

1796 ई० में मेकेनली ने, जो टेलीग्राफ का सम्पादक था, एक लेख को प्रकाशित करके अधिकारियों को नाराज कर दिया। उस लेख में उसने कुछ सरकारी कर्मचारियों के विरुद्ध कुछ आरोप लगाये थे। उसी वर्ष कलकत्ता गजट के सम्पादक पर अभियोग लगाया गया उसका कारण यह था कि उसने कुछ पत्र-व्यवहार का उल्लेख किया था जो डायरेक्टरों की कमेटी तथा फ्रांसीसी गणतन्त्र के मध्य हुआ था।

प्रेस के विकास के प्रारम्भिक चरण में 18वीं शताब्दी तक कम्पनी तथा कम्पनी के अधिकारियों का व्यवहार सकारात्मक नहीं था। कम्पनी के नीति तथा उसके अधिकारियों के आलोचना करने के कारण हिक्की, डुएन और मेकेनली जैसे पत्रकारों को कम्पनी तथा कम्पनी के अधिकारियों का कोपभाजन बनना पड़ा। भारत में प्रेस के विकास के प्रारम्भिक-चरण अर्थात 18वीं शताब्दी तक समाचार-पत्रों के प्रकाशन के लिए कोई नियम नहीं थे। समाचार-पत्रों का भविष्य कम्पनी के अधिकारियों की दया पर पूर्णतया निर्भर होता था। 18वीं शताब्दी तक के छपने वाले समाचार-पत्रों की कुल संख्या लगभग 100 या 200 थी और इन सभी निकलने वाले समाचार-पत्रों का प्रमुख उद्देश्य एंग्लो-इण्डियन लोगों का मनोरंजन करना होता था।

———×———×———